हस्तशिल्प विकास योजनाओं का अध्ययन छत्तीसगढ के कोंडागांव जिला के विशेष संदर्भ में

[1]अर्चना सेठी, [2]निर्मल राम नेताम, [3]हितेश राठौर

[1,2]अर्थशास्त्र अध्ययन शाला, पं.रविशंकर शुक्ल वि वि
[3]स्व. डारन बाई तारम, शास.महा. गुरुर

***Corresponding Author:** archanasethi96@gmail.com

सारांश

हस्तशिल्प हमारी अर्थव्यवस्था के असंगठित क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह मुख्य रुप से ग्रामीण क्षेत्र की क्रियाकलाप है। जिसकी पहुंच पिछडे और दुर्गम क्षेत्रों में भी है। हस्तशिल्प न केवल लाखों लोगों को रोजगार प्रदान कर रही है वरन इस क्षेत्र में बडी संख्या में नये लोगों की संभावना है। केंद्र सरकार और राज्य सरकारें हस्तशिल्प और विशेषकर ग्रमीण हस्तशिल्प को बढावा देने के लिए कई योजनायें चला रही है। इसके तहत शिल्पकारों के लिए अनेक योजनायें चलाई जा रही है। योजनाओं की सफलता के लिए आवश्यक है कि शिल्पकार भी जागरुक हो। योजनायें केवल कागज पर नहीं चले। परीक्षण से स्पष्ट है कि सभी योजनाओ का पी का मूल्य 0.05 से अधिक है, अतः शून्य परिकल्पना स्वीकार होती है। हस्तशिल्प विकास कार्यक्रमों का हस्तशिल्प उत्पाद एवं विक्रय पर सार्थक प्रभाव नही पडा है। योजनाएं तभी सफल हो सकती है जब शासन के साथ साथ शिल्पकार भी जागरुक हों एवं अपने अधिकारों के लिए सजग हो।

शब्द कूंजी: हस्तशिल्प, मानकीकरण, असंगठित क्षेत्र, स्वरोजगार।

प्रस्तावना

हस्तशिल्प अर्थात हांथ या अत्यंत सरल औजार की मदद से निर्मित उत्पाद। उपयोग के उददेश्यों के आधार पर हस्तशिल्प एक लोकशिल्प भी है। आदिवासी हस्तशिल्प का अर्थ आदिवासी क्षेत्र में पाये जाने वाले शिल्प से है। यदि भारत के गरीबों को खुशहाल होना है तो उन्हें व्यवसाय और आजीविका के सहायक स्रोत की आवश्यकता है। वे केवल कृषि पर निर्भर नहीं रह सकते। महात्मा गांधी की यह उक्ति आज भी उतनी प्रासंगिक है जितनी 100 वर्ष पहले, जब यह बात कही गई थी। वर्तमान समय गांव,गरीब, किसान और पर्यावरणीय समस्याओं से चितित होने की है। ऐसे समय हमें इस बात पर चिंतन करना चाहिए कि भारत के गांव, गरीब और प्रकृति को खुशहाल करने वाले व्यवसाय और आजीविका के सहायक स्रोत क्या होने चाहिए, इसका उत्तर है हस्तशिल्प। कोंडागांव जिले में मुख्यतः बेल मेटल या ढोकरा कला शिल्प पाया जाता है।

अध्ययन का उददेश्य

1.हस्तशिल्प याजनाओं का अध्ययन करना

2.हस्तशिल्प योजनाओं की हस्तशिल्प उत्पादन एवं विपणन पर प्रभाव ज्ञात करना

शोध प्रविधी :

समंक का संकलन : यह अध्ययन छत्तीसगढ के आदिवासी जिला कोंडागांव की हस्तशिल्प पर आाधारित है। अध्ययन हेतु कोंडागांव जिले के 4 विकासखंड कोंडागांव ,मकडी,केशकाल एवं बडे राजपूत से 80.80 शिल्पकारों से अनुसूची के माध्यम से जानकारी एकत्र की गई है। कुल 320 शिल्पकारों से जानकारी एकत्र की गई है।

परिकल्पना : H_0: हस्तशिल्प विकास कार्यक्रमों का हस्तशिल्प उत्पादन एवं विक्रय पर सार्थक प्रभाव नहीं पडा है।

परिकल्पना परीक्षण : परिकल्पना परीक्षण हेतु काई वर्ग परीक्षण किया गया है।

DOI: 10.52228/JRUA.2025-32-1-5

शोध साहित्य का अध्ययन

सविता वर्मा ढोकरा प्रारंभ में खानाबदोश कारीगरों के एक समूह से संबंधित था। इसमें मोम कास्टिंग तकनीक के माध्यम से धातु के शिल्प बनाया जाता है। प्रत्येक कलाकृति एक कठिन प्रक्रिया के माध्यम से बनाई जाती है जिसमें कई दिन लग जाता है। सन 2012 से बस्तर से अलग हुए कोंडागांव जिले में भेलवापारा मोहल्ले में ऐसे सैंकडों परिवार है जो ढोकरा शिल्पकला से मूर्तियों में जान डाल देते है। **शर्मा ,शीतल एवं शुक्ला ,हंसा** 2015 हस्तशिल्प का प्रमाण मोहनजोदडो व हडप्पा संस्कृति के समय से ही प्राप्त है ,यह इस बात का प्रमाण है कि शिल्प का प्रारंभ एवं महत्व युगों से है। भारत के कुछ राज्यों की हस्तशिल्प कला विश्व प्रसिद्व हैं। भारतीय हस्तशिलप का पूरे विश्व के हस्तशिल्प में 0.84 प्रतिशत योगदान है। भारतवर्ष में लगभग 70 लाख आदिवासी परिवार हसतशिल्प ब्यवसाय पर निर्भर है लगभग 21000 करोड का उत्पादन भारतवर्ष में होता है। जिसका 9.3 हजार करोड का निर्यात किया जाता है। इस उद्योग से लाखों लोगों को रोजगार प्राप्त होता है। **जयकर,पीपुल** ,सरकार के हस्तशिल्प उद्योग कार्यक्रम के निम्न उददेश्य हैः 1.हस्तशिल्पों को प्रोत्साहन देना 2. अनुसंधान एवं डिजाइन का विकास करना 3. तकनीकी विकास 4 .विपणन। हस्तशिल्प की समस्याओं पर सरकार को सलाह देने के लिए एवं उसके संवर्धन एवं विकास के लिए 1952 में अखिल भारत ीय हस्तशिल्प बोड की स्थापना की गई।

भारतीय अर्थब्यवस्था में हस्तशिल्प का महत्व

सांस्कृतिक रुप से धनी भारत देश की अर्थब्यवस्था में बडी भूमिका है। स्थानीय संसाधन का उपयोग ,सस्ते श्रम की उपलब्धता ,निम्न पूंजी निवेश के कारण इस उद्योग की बडी महत्ता हैं ,लेकिन तकनीक का अभाव,पूंजी की कमी निम्न साक्षरता ,अज्ञानता, अकुशल श्रम,परंपरागत उत्पाद ,विपणन सीधे उपभोक्ता को नहीं होना, आदि इस उद्योग की प्रमुख समस्या है। भारत में हस्तशिल्प उत्पाद का निर्यात में बडा योगदान है। उत्पादन का 40 प्रतिशत घरेलू उपभोग एवं 60 प्रतिशत निर्यात किया जाता हैं। बारहवीं पंचवर्षीय योजना में 28368 करोड रुपये का निर्यात किया गया था। 2010.11 में 6.7 मिलियन लोगों को रोजगार मिला था जो 2016.17 में 12.29 मिलियन हो गया । संयुक्त वार्षिक वृद्विदर 10 प्रतिशत था। इस क्षेत्र में रोजगार देने की अपार क्षमता है। राष्ट्रीय स्तर पर योजना बनाने से पूरे देश को लाभ मिलेगा।

तालिका 1: भारतीय हस्तशिल्प वस्तु का निर्यात

वर्ष	कुल निर्यात करोड रुपये	हस्तशिल्प निर्यात करोड रुपये	कुल निर्यात में हस्तशिल्प निर्यात का प्रतिशत
2000.1	203,571.01	8,490.16	4.17
2005.06	456,417.86	14,526.85	3.18
2010.11	1,136,964.26	7,870.31	0.69
2011.12	1,465,959.40	11,130.04	0.76
2012.13	1,634,318.29	13,892.59	0.85
2013.14	1905,011.09	19,103.98	1.00
2014.15	1,896,348.42	20,082.53	1.06
2015.16	1,716,384.40	21,557.12	1.26
2016.17	1,849,433.55	24,392.39	1.32
2017.18	1,956,514.53	23,029.36	1.18
2018.19	2,307,726.19	25,548.97	1.11
2019.20	2,219,854.18	25,270.14	1.14
2020.21	2,159,043.22	25,679.98	1.19
2021.22	3,147,021.49	33,253.00	1.06
2022.23	3,621,549.88	30,019.24	0.83
2023.24	3,618,952.27	32,758.80	0.91

Source: https://tradestat.commerce.gov.in/ and http://www.epch.in/

DOI: 10.52228/JRUA.2025-32-1-5

तालिका 1.2 से स्पष्ट है कि हस्तशिल्प वस्तुओं का निर्यात लगातार बढता जा रहा है। 2000.01 में हस्तशिल्प वस्तुओं का निर्यात 8,490.16 रुपये था जो कुल निर्यात का 4.17 प्रतिशत था । 2023.24 में हस्तशिल्प वस्तुओं का निर्यात बढकर 32,758.80 करोड रुपये हो गया, जो कुल निर्यात का 0.19 प्रतिशत है। स्पष्ट है कि शासन को इस क्षेत्र में विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

रेखाचित्र 1.1

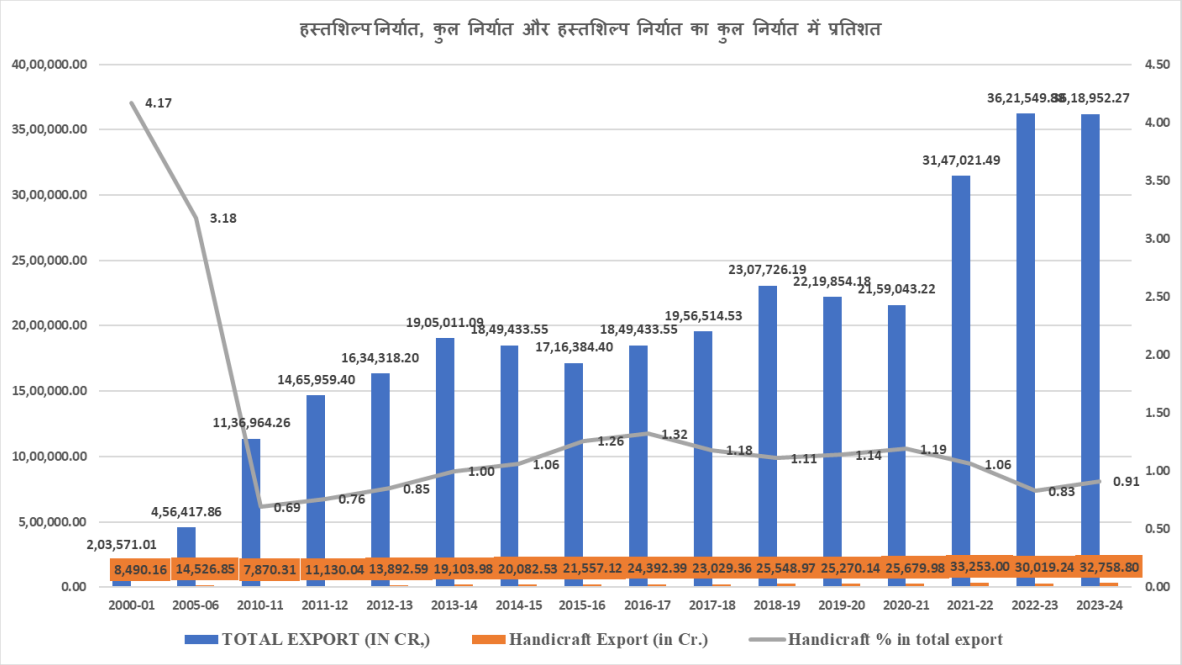

तालिका 2: भारतीय हस्तशिल्प निर्यात में विभिन्न देशों की स्थिति 2024

1	देश	प्रतिशत
2	संयुक्त राज्य अमेरिका	41
3	थ्रब्रटेन	7
4	संयुक्त अरब अमीरात	6
5	र्जमनी	5
6	नेदरलैंड	5
7	फ्रांस	3
8	आस्ट्रेलिया	2
9	अन्य देश	31

Source:Export promotion council for handicrafts(EPCH)2024

तालिका 2 से स्पष्ट है कि भारतीय हस्तशिल्प उत्पाद की संयुक्त राज्य अमेरिका सबसे बडा आयातक देश हैं। भारत से होने वाले निर्यात का 41 प्रतिशत अमेरिका को होता है।

रेखाचित्र 1.2

DOI: 10.52228/JRUA.2025-32-1-5

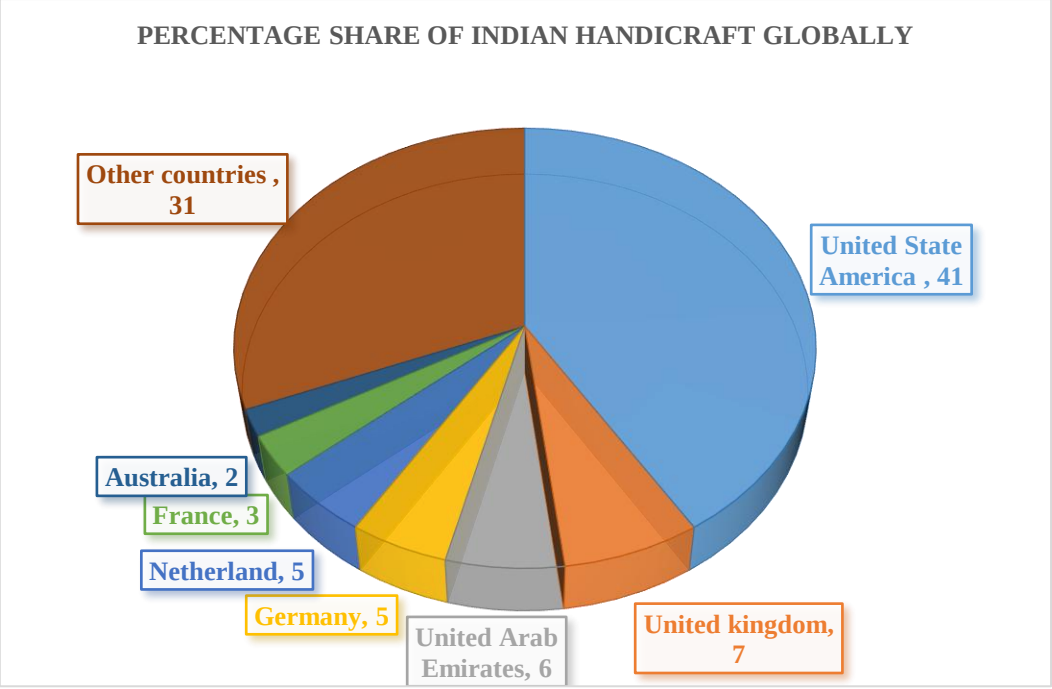

हस्तशिल्प विकास कार्यक्रम

हस्तशिल्प हमारी अर्थब्यवस्था के असंगठित क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह मुख्य रुप से ग्रामीण क्षेत्र की क्रियाकलाप है। जिसकी पहुंच पिछडे और दुर्गम क्षेत्रों में भी है। हस्तशिल्प न केवल लाखों लोगों को रोजगार प्रदान कर रही है वरन इस क्षेत्र में बडी संख्या में नये लोगों की संभावना है।

1.विपणन समर्थन और सेवायें

हस्तशिल्प के विकास में विपणन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत एक विशाल देश है और घरेलू बाजार अपने आप में हस्मशिल्प वस्तुओं के लिए एक अत्यधिक संभावित बाजार है। यह दुनियां की सबसे बडी विकासशील अर्थब्यवस्था है, लेकिन दुनियां के निर्यात आंकडों में इसका योगदान कम है। विपणन समर्थन कार्यक्रम द्वारा उत्पाद की बिक्री एव निर्यात के आंकडों को बढाया जायेगा। भारत के हस्तशिल्प उत्पाद की बिक्री घरेलू एवं विदेशी दोनों बाजारों में बिक्री बढाने हेतु प्रयास किया जा रहा है। मेलों,प्रदर्शनियों,सेमीनार, ब्रांड प्रचार कार्यक्रम, के साथ साथ शिल्पकारों को संवेदनशील बनाने का प्रयास किया जा रहा है तथा अंतर्राष्ट्रीय गुणवत्ता मानकों एवं पैकेजिंग,नैतिक और पर्यावरण आश्वासन आदि पर संगोष्ठी और कार्यशालाओं के माध्यम से निर्यातकों को जागरुक किया जा रहा है। हस्तशिल्प उत्पादों के प्रचार व ब्रांड बनाने हेतु प्रिंट,इलेक्ट्रानिक और सोशल मीडिया के माध्यम से प्रचार हेतु सहयोग दिया जा रहा है।

2.कौशल विकास कार्यक्रम

हस्तशिल्प अपने पारंपरिक मूल्यों ,सौंदर्यशास्त्र ,विशिष्टता और शिल्प कौशल के लिए जाने जाते है। शिल्प अभ्यास और पारंपरिक मूल्य एक पीढी से दूसरे पीढी को हस्तांतरित होता है। हालांकि नए उपकरण और प्रौद्योगिकी के आगमन से शिल्प सीखने की परंपरा परिवर्तित हो गई है। मानकीकृत उत्पाद प्रक्रियाएं ,कुशल जनशक्ति ,हस्तशिल्प उत्पादों के लिए डिजाइन ,संचार कौशल और अन्य साफट स्किल्स परिवर्तित होते रहता है। ये सब हस्तशिल्प के लिए अनिवार्य आवश्यकताएं बन गई है। इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए हस्तशिल्प क्षेत्र में कौशल विकास की संकल्पना की गई है,इसके 4 घटक है:

i.डिजाइन और प्रौद्योगिकी विकास कार्यशाला

DOI: 10.52228/JRUA.2025-32-1-5

यह बाजार की वर्तमान डिजाइन आवश्यकताओं को पूरा करने पर केद्रित है तथा इसका प्रमुख उद्देश्य शिल्पकारों के मौजूदा कौशल का उपयोग करके हस्तशिल्प क्षेत्र की वर्तमान जरुरतों के अनुसार नए डिजाइन विकसित करना है।

ii. गुरुशिष्य हस्तशिल्प प्रशिक्षण कार्यक्रम

इस योजना का उद्देश्य कौशल अंतर कोसमाप्त करने और बाजार की मांग को पूरा करने के लिए पारंपरिक शिल्प ज्ञान को मास्टर शिल्पकार गुरु से नई पीढी के कारीगर शिष्य तक स्थनांतरित करना है। इसमें तकनीकी और साफट स्किल प्रशिक्षण प्रदान करके हस्तशिल्प क्षेत्र में एक प्रशिक्षित कार्यबल तैयार किया जा रहा है।

iii.ब्यापक कौशल उन्नयन कार्यक्रम

इस योजना का उद्देश्य कौशल अंतराल को समाप्त करने ,हस्तशिल्प क्षेत्र की पारंपरिक शिल्प की प्राचीन परंपरा को पुनर्जीवित करने और राष्ट्रीय कौशल योग्यता ढांचा के आधार पर मांग आाधारित और स्वरोजगार उन्मुख प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए उद्योग के प्रयास को पूरक बनाना है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत चिन्हित स्थान पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजत किया जाता है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य शिल्पकारीगरों कौशल उन्नयन,डिजाइन,नवाचार और साफट कौशल में ब्यापक विकास करना है।

iv.बेहतर टुलकिट वितरण कार्यक्रम

बेहतर टुलकिट और कुशल हांथ हस्तशिल्प के 2 तत्व है जो शिल्पकारों की उत्पादकता बढाने में आवश्यक हैं। बेहतर टुलकिट उत्पाद की गुणवत्ता एवं शिल्पकार की उत्पादकता को बढाते है। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में मागं बनाये रखने के लिए उत्पाद की एकरुपता और उच्च गुणवत्ता युक्त होंना चाहिए। इन आवश्यकताओं के लिए बेहतर टुलकिट वितरण किया जा रहा है।

3.अम्बेडकर हस्तशिल्प विकास योजना

यह योजना कलस्टर विशिष्ट योजना है। इस योजना में शिल्पकारों की आवश्कता अनुसार कलस्टर विशिष्ट दृष्टिकोण की परिकल्पना की गई है। हस्तशिल्प समूह की भैगोलिक पहचान में 3 किलोमीटर के दायरे में कुछ गांव या नगरपालिका क्षेत्र शामिल किया गया है। शिल्पसमूह में शिल्पकार एकल शिल्प या एक से अधिक शिल्प के उत्पाद का निर्माण कर सकते है। पहचान किये गए कलस्टर को 5 वर्ष की अवधि के लिए वित्तीय ,तकनीकी और सामाजिक हस्तक्षेप के रुप में समर्थन दिया जाएगा। हस्तशिल्प का वर्तमान में रोजगार सृजन एवं विदेशी मुदां अर्जन में महत्वपूर्ण योगदान है लेकिन इस क्षेत्र को अपनी असंगठित प्रकृति के साथ साथ शिक्षा की कमी ,पूंजी और तकनीकी की कमी, बाजार की जानकारी का अभाव, खराब संस्थागत ढांचे आदि के कारण नुकसान उठाना पडा है। इन बाधाओं को दूर करने 2001. 02 में केंद्रीय योजना के **रुप में केंद्रीय निगम की स्थापना की गई थी।** इस योजना के तहत उद्यमिता विकास कार्यक्रम चलाए जाते है,जो शिल्पियों को मात्र उत्पादक बनकर रह जाने के बजाय अपने उत्पादों के विनिर्माता और कारोबारी बनने के लिए प्रोत्साहित करते है।

4.शिल्पकारों को प्रत्यक्ष अंतरण

डीबीटी की तर्ज पा चलने वाली यह योजना बुजुर्ग शिल्पकारों के लिए है। शिल्पगुरु सम्मान ,राष्ट्रीय पुरस्कार अथवा मेरिट प्रमाणपत्र या राज्य पुरस्कार पाने वाले शिल्पियों और हस्तशिल्प में उत्कृष्ट कारीगरी वाले ऐसे शिल्पियों को इसके तहत वित्तीय सहायता दी जाती है,जिनकी वार्षिक आय 1 लाख रुपये से अधिक नहीं होती और जिनकी आयु 60 वर्ष से कम नहीं होती। इसके अनुसार उन्हें हर माह 5000 रुपये दिए जाते है। इसके अतिरिक्त शिल्पकारों को ब्याज में रियायत दी जाती है।

5. बुनियादी ढांचा एवं प्रौद्योगिकी सहायता

इसके अंतर्गत शिल्पियों को शहरों और महानगरों में ग्राहकों से सीधे संपर्क करने और माल बेचने के लिए सुविधा उपलब्ध करायी जाती है। नई दिल्ली में दिल्ली हाट तथा कई शहरों में इसके उदाहरण है। इसी तरह शहरों में शिल्पियों के लिए एंपोरियम और हस्तशिल्प म्यूजियम और हस्तशिल्प म्यूजियम तथा कच्चे

DOI: 10.52228/JRUA.2025-32-1-5

माल के डिपो बनाए गए है। विभिन्न विभाग शिल्प निर्यातकों और उद्यमियों को तकनीकी प्रगति में मदद मिलता है। कच्चे माल और तैयार उत्पादों के मानकीकरण लिए जांच प्रयोगशाला बनाया गया है।

6.अनुसंधान एवं विकास

शिल्पकार पीढी दर पीढी एक ही तरीके से काम करने वाले शिल्पी आधुनिक समय की मांग के अनुसार खुद को ढाल नहीं पाते और नई तकनीकी का उपयोग नहीं कर पाते। इससे उनका उत्पादन कम होता है और नए और विभिन्न डिजाइन के उत्पादन नहीं करके वे पुराने ढर्रे के उत्पादन करते रहते है और समूह या कलस्टर का लाभ नहीं उठा पाते। परिणामस्वरुप उनकी आमदनी कम होती है। कुछ शिल्पकार 25000 रुपये से 30000 रुपए मासिक अर्जित करते हैं वहीं कुछ शिल्पकार 10000 रुपये मासिक ही अर्जित करते है।अधिकांश शिल्पकार ग्रामीण इलाके में रहते हैं एवं आधुनिक मशीनों के बजाय पारंपरिक तरीके से उत्पादन करते है। गांवों में रहने के कारण वे संगठित नहीं होते एवं न ही वे अपने उत्पादन के सही कीमत प्राप्त कर पाते है।

कारीगरों को प्रत्यक्ष लाभ

शिल्पकारों को बेहतर जीवनयापन ,आसान ऋण तक पहुंच और उनके हुनर को सम्मानिम करने हेतु भी कई प्रयास किये गए है। इसके तहत निम्नलिखित कार्यक्रम चलाये जा रहेः

वृद्धावस्था में कारीगरों को सहायता

यह योजना कारीगरों को उनके बुढापे के समय सहायता देने के लिए प्रस्तावित है। भारत में यह योजना हस्तशिल्प को को बढावा देने के लिए लागू की गई है। इस योजना हेतु मास्टर शिल्पकार जो शिल्प गुरु पुरस्कार ,राष्ट्रीय पुरस्कार या योग्यता प्रमाणपत्र या राज्य पुरस्कार प्राप्त करते है और हस्तशिल्प में असाधारण शिल्प कौशल के कारीगर इस योजना के पात्र होंगे। इस योजना के तहत मासिक 5000रु. भत्ते का प्रावधान है।

ब्याज अनुदान एवं मार्जिन मनी की सुविधा

इस योजना के माध्यम से हस्तशिल्प कारीगरों के लिए ब्याज अनुदान क साथ बैंक ऋण सुविधा का प्रावधान है। इसके अंतर्गत सभी अनुसूचित बैंकों ,राज्य सहकारी बैंकों ,क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों से मुद्रा ऋण प्राप्त करने वाले कारीगरों को मार्जिन मनी प्रदान की जायेगी। हस्तशिल्प कारीगरों को मुद्रा ऋण के तहत स्वीकृत राशि का 20 प्रतिशत अनुदान उनके ऋण खाते में एकमुश्त अनुदान के रुप में प्रदान किया जायेगा जो 20000 रुपये से अधिक नहीं होगा।

हस्तशिल्प कारीगरों के लिए बीमा योजना

प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना,प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना और आम आदमी बीमा योजना का उद्देश्य हस्तशिल्प कारीगरों को जीवन बीमा कवर प्रदान करना है। शिल्पकार समय समय पर निर्धारित शर्तों के अधीन योजनाओं का लाभ लेने के पात्र होंगे।

हस्तशिल्प पुरस्कार

इस योजना के अंतर्गत हस्तशिल्प क्षेत्र के विकास और उसे बढावा देने के लिए उत्कृष्ट मास्टर शिल्पकारों को उनके योगदान को मान्यता देने हेतु हस्तशिल्प क्षेत्र में सर्वोच्च पुरस्कार प्रदान करता है। जीवन में एक बार प्रदान किया जाने वाला यह पुरस्कार उन्हें हमारी पुरानी शिल्प परंपराओं और शिल्प कौशल में उत्कृष्टता को बनाये रखने के लिए प्रोत्साहित करता है। इस प्रकार यह योजना कारीगरों को प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण प्रदान करती है। शिल्प गुरु पुरस्कार और राष्ट्रीय पुरस्कार दो श्रेणियों में प्रदान किये जाते है।

बुनियादी ढांचा और प्रौद्योगिकी समर्थन

हस्तशिल्प क्षेत्र की प्रमुख बाधाओं में बुनियादी संरचना और नई प्रौद्योगिकी की कमी शामिल है। इस कमी को दूर करने हेतु निम्नलिखित प्रयास किया जा रहा हैः

अ. शहरी हाट की स्थापना

DOI: 10.52228/JRUA.2025-32-1-5

इसका उद्देश्य हस्तशिल्प कारीगरों को प्रत्यक्ष विपणन सुविधाएं प्रदान करने के लिए कस्बों ,महानगरों एवं शहरों में एक स्थायी विपणन अवसंरचना स्थापित करना है। यह उन्हें अपने उत्पाद को ब्यापक लक्षित दर्शकों ग्राहक वर्ग को वर्ष भर बेचने में सक्षम करेगा।

ब.एम्पोरियम

इसके अंतर्गतएम्पोरियम की स्थापना के लिए सहायता प्रदान की जाएगी। इन्हें कार्यान्वयन एजेंसियों के अपने या किराये के भवन में ब्यावसायिक रुप से ब्यवहार्य स्थानों स्थापित किया जायेगा। इसका मूल उद्देश्य स्थानीय हस्तशिल्प कारीगरों को उनके क्षेत्र में विपणन मंच पदान करना है।

मार्केटिंग और सोर्सिंग हब

वन स्टाप शापिंग की अवधारणा पर ब्यावसायिक रुप से ब्यवहार्य शहरों एवं कस्बों में हस्तशिल्प के लिए मार्केटिंग काम्पलेक्स स्थापित करने का प्रस्ताव है। यह थोक विक्रेताओं ,खुदरा विक्रेताओं ,विदेशी खरीदारों और उपभोक्ताओं को हस्तशिल्प उत्पादों की पूरी श्रृंखला का प्रदर्शन करके संभावित लक्ष्य खंड तक पहुंचने के लिए एक विपणन मंच प्रदान करेगा।

हस्तशिल्प संग्रहालय

हस्तशिल्प संग्रहालय का उद्देश्य एक ऐसा मंच स्थापित करना है जिसके माध्यम से भारत की पारंपरिक कला और शिल्प को कलाकारों,विद्वानों ,डिजाइनरों और शिल्प प्रेमियों के बीच लोकप्रिय बनाया जा सके। संग्रहालय का प्राथमिक उद्देश्य शिल्प कौशल और डिजाइन या उसके कार्यात्मक पहलुओं में वैचारिक नवाचारों में उत्कृष्टता प्रदर्शित करने वाली वस्तुओं को एकत्र करना और संरक्षित करना है।

शिल्प आधारित संसाधन केंद्र

इस केंद्र का उद्देश्य ब्यापक हैंडहोल्डिंग के लिए पहचाने ए शिल्प में एकल खिडकी समाधान प्रदान करने के लिए एक संस्थागत तंत्र तैयार करना है। इस केंद्र का लक्ष्य हस्तशिल्प के क्षेत्र में सर्वागींण विकास करना तथा प्रशिक्षण की सहायता से लुप्तप्राय शिल्पों को पुनर्जीवित करना तथा हस्तशिल्प की निरंतर प्रगति के लिए पारंपरिक एवं गैर पारंपरिक शिल्पकारों को अधिक से अधिक रोजगार के अवसर प्रदान करना है। यह केंद्र कच्चे माल की उपलब्धता ,आवश्यक प्रौद्यिगिकी ,कुशल मानव संसाधन और कलस्टर का विवरण भी प्रदान करेंगें जहां से इन नवीन उत्पादों को प्राप्त किया जा सकता है। यहां कारीगरों और उद्यमियों को तकनीकी और तकनीकी सहायता ,विपणन सूचना,उद्यम विकास ,सूक्ष्म वित्त गतिविधि ,उत्पाद की जानकारी आदि दी जाती है।

सामान्य सुविधा केंद्र

सामान्य सुविधा केंद्र का उद्देश्य पैमाने की अर्थब्यवस्था ,मूल्य प्रतिस्पर्धा ,गुणवत्ता नियंत्रण ,निरंतर आधार पर डिजाइन और प्रौद्योगिकी इनपुट का अनुप्रयोग ,उत्पाद विविधीकरण का दायरा और उच्च इकाई मूल्य प्राप्ति और विश्व ब्यापार संगठन के संगत मानकों का अनुपालन सुनिश्चित करना है। इस तरह की एक सामान्य सुविधा से उत्पादन लागत में महत्वपूर्ण कमी आयेगी। उच्च मूल्य वाले उत्पादों की विविध श्रोणी का उत्पादन ,नमूना विकास ,आर्डर निष्पादन में प्रतिक्रया समय में कमी और अंतिम उत्पादों की उच्च गुणवत्ता सुनिश्चित होगी।

कच्चा माल डिपो

इसका उद्देश्य कारीगरों को उचित दर पर गुणवत्ता ,प्रमाणित और श्रेणीकृत कच्चामाल आसानी से उपलब्ध कराना है।

निर्यातकों एवं उद्यमियों को प्रौद्योगिकी उन्नयन सहायता

इसका उद्देश्य निर्यातकों एवं उद्यमियों को प्रौद्योगिकी उन्नयन सहायता प्रदान करना है। सुविधा केंद्र उत्पाद ,उत्पादकता,गुणवत्ता आदि का समर्थन करने के लिए पैकेजिंग मशीनरी सहित आधुनिक मशीनरी के साथ एक बुनियादी ढांचा होना चाहिए।

DOI: 10.52228/JRUA.2025-32-1-5

परीक्षण प्रयोगशाला

मशीनरी और उपकरण ,सपोर्ट फिक्सचर और फर्नीचर कच्चा माल प्रसंस्करण अनुभाग,पैकेजिंग और वेयरहाउसिंग अनुभाग , ज्ञान साझा काने और भविष्य के संदर्भ आदि के लिए मास्टर रुम सहित रखरखाव अनुभाग के प्रावधान के साथ परीक्षण प्रयोगशाला पर्याप्त और पर्याप्त स्थानों में बनायी जायेगी।

शिल्पग्राम

शिल्पग्राम आधुनिक समय की अवधारणा है जिसमें शिल्प को बढावा देने के लिए और पर्यटन को एक ही स्थान पर लिया जा रहा है। कारीगर एक ही स्थान पर रहते और कार्य करते है। उन्हें अपने उत्पाद को बेचने का अवसर भी प्रदान किया जाता है जिससे आजीविका सुनिश्चित हो सके। शिल्प वस्तुओं की प्रदर्शन और बिक्री यहां की जाती है। इसके अंतर्गत मौजूदा गांवों में बुनियादी ढांचे में सुधार के लिए सहायता प्रदान की जायेगी,जहां समान शिल्प का अभ्यास करने वाले शिल्पकार पर्याप्त संख्या में रहते है और नये ग्रामों की स्थापना भी की जाएगी,जहां शिल्पकारों का पुनर्वास किया जा सकता है। इसका उद्देश्य उन गांवों का चयन करना है जिन्हें उत्पादों की बिक्री सुनिश्चित करने के लिए किसी पर्यटन सर्किट से जोडा जा सकता है। इसके तहत बुनियादी ढांचे के सुधार एवं निर्माण के लिए धन मुहैया कराया जायेगा जिसमें सडके, कारीगरों के घर और उनके वर्कशेड क्षेत्र सीवरेज ,पानी,स्ट्रीट लाइट ,फुटपाथ,दुकानें और प्रदर्शन क्षेत्र शामिल होंगे। इनका कार्यान्वयन एजेंसी द्वारा किया जाएगा और शिल्पकारों को नए वर्कशेड और प्रदर्शन क्षेत्रों के साथ पुनर्वासित किया जायेगा। प्रदर्शन क्षेत्र स्टाल के रुप में होंगे जहां कारीगर अपना उत्पाद बेंच सकेंगे।

ई कामर्स : ई कामर्स के माध्यम से हस्तशिल्प उत्पाद की आनलाइन क्रयविक्रय की सुविधा होने से ग्राहक को मनपसंद उत्पाद घर बैठे ही उपलब्ध हो जाती है। ग्राहक को अपनी मनपसंद उत्पाद के लिए उस क्षेत्र में नहीं जाना पडता। इससे बाजार का विस्तार होता है।

परीकल्पना परीक्षण

तालिका: 2 योजनाएं एवं पी मूल्य

क्र.	योजना का नाम	P मूल्य	शून्यपरिकल्पना स्वीकार या अस्वीकार
1.	विपणन समर्थन और सेवायें	0.098	शून्यपरिकल्पना स्वीकार
2.	डिजाइन और प्रौद्योगिकी विकास कार्यशाला	0.12	शून्यपरिकल्पना स्वीकार
3.	गुरुशिष्य हस्तशिल्प प्रशिक्षण कार्यक्रम	0.07	शून्यपरिकल्पना स्वीकार
4.	शिल्पकारों को प्रत्यक्ष अंतरण	0.14	शून्यपरिकल्पना स्वीकार
5.	बुनियादी ढांचा एवं प्रौद्योगिकी सहायता	0.23	शून्यपरिकल्पना स्वीकार
6	अनुसंधान एवं विकास	0.72	शून्यपरिकल्पना स्वीकार
7	वृद्धावस्था में कारीगरों को सहायता	0.23	शून्यपरिकल्पना स्वीकार
8	ब्याज अनुदान एवं मार्जिन मनी की सुविधा	0.47	शून्यपरिकल्पना स्वीकार
9	हस्तशिल्प कारीगरों के लिए बीमा योजना	0.07	शून्यपरिकल्पना स्वीकार
10	शहरी हाट की स्थापना	0.09	शून्यपरिकल्पना स्वीकार
11	एम्पोरियम	0.15	शून्यपरिकल्पना स्वीकार
12	मार्केटिंग और सोर्सिंग हब	0.15	शून्यपरिकल्पना स्वीकार

DOI: 10.52228/JRUA.2025-32-1-5

13	हस्तशिल्प संग्रहालय	0.92	शून्यपरिकल्पना स्वीकार
14	शिल्प आधारित संसाधन केंद्र	0.16	शून्यपरिकल्पना स्वीकार
15	सामान्य सुविधा केंद्र	0.18	शून्यपरिकल्पना स्वीकार
16	कच्चा माल डिपो	0.06	शून्यपरिकल्पना स्वीकार
17	निर्यातकों एवं उद्यमियों को प्रौद्योगिकी उन्नयन सहायता	0.84	शून्यपरिकल्पना स्वीकार
18	शिल्पग्राम	0.61	शून्यपरिकल्पना स्वीकार
19	ई कामर्स पोर्टल	0.14	शून्यपरिकल्पना स्वीकार

परीक्षण से स्पष्ट है कि सभी योजनाओ का पी का मूल्य 0.05 से अधिक है ,अतः शून्य परिकल्पना स्वीकार होती है। हस्तशिल्प विकास कार्यक्रमों का हस्तशिल्प उत्पाद एवं विक्रय पर सार्थक प्रभाव नही पडा है।

निष्कर्ष

योजनाएं तभी सफल हो सकती है जब शासन के साथ साथ शिल्पकार भी जागरुक हों एवं अपने अधिकारों के लिए सजग हो। परीक्षण से स्पष्ट है कि सभी योजनाओ का पी का मूल्य 0.05 से अधिक है ,अतः शून्य परिकल्पना स्वीकार होती है। हस्तशिल्प विकास कार्यक्रमों का हस्तशिल्प उत्पाद एवं विक्रय पर सार्थक प्रभाव नही पडा है। इसका प्रमुख कारण है कि शिल्पकार जागरुक नहीं है। हस्तशिल्पियों का ग्रामीण ,तहसील एवं ब्लाक स्तरीय डाटाबेस बने। मौजूदा कारीगरों की गुणवत्ता ,संभावित उत्पाद,कच्चेमाल की स्थानीय उपलब्धता,ढांचागत ब्यवस्था,शासकीय योजनाओं ,प्रशिक्षण कार्यक्रमों आदि के बारे में जानकारी हो।

आभार : भारतीय सामाजिक अनुसंधान परिषद वृहद परियोजना पर आधारित

संदर्भ

AIACA. (2017). NATIONAL HANDICRAFTS POLICY REPORT. All India Artisans and Craftworkers Welfare Association (AIACA).

Bhat, J. A., & Yadav, P. (2016). The sector of handicrafts and its share in Indian economy. Arabian Journal of Business and Management Review S, 3, 2016.

Chattopadhyaya, K. (1963). Indian Handicrafts. https://books.google.co.in/books?id=BlUIAQAAIAAJ Allied Publishers. Chinoy,

Dixit, P., & Lal, R. C. (2019). Inclusive Growth and Social Responsibility-A Critical Analysis of Indian Textile Industry. MERC Global's International Journal of Management, 7(2), 202 210. IBEF. (2024). Indian Handicrafts Industry & Exports. India Brand Equity Foundation. https://www.ibef.org/exports/handicrafts-industry-india Kalshetti,

Mehra, A., Mathur, N., & Tripathi, V. (2019). Sahaj Crafts: The challenge of alleviating poverty in Western Rajasthan. Emerald Emerging Markets Case Studies, 9(1), 1–45. https://doi.org/10.1108/EEMCS-06-2018-0099

Mehrotra, M. A. (2019). Poverty Reduction Through Pro-Poor Tourism: A Case Study of Handicraft Sector of Varanasi. https://doi.org/10.5281/ZENODO.2651153 Ministry of Textiles. (n.d.). Working group report on Handicrafts for the 12th Five Year Plan. Ministry of Textiles. http://164.100.161.239/aboutus/committee/wrkgrp12/wg_handi1101.pdf

Mir, L. A., & Bhushan, S. (2014). An analysis of current scenario and contribution of Handicrafts in Indian economy. Journal of Economics and Sustainable Development, 5(9), 75–78.

 DOI: 10.52228/JRUA.2025-32-1-5

Narendra, S., & Babu, M. (2023). IMPACT OF COVID-19 PANDEMIC ON HANDICRAFTS SECTOR IN KRISHNA DISTRICT OF ANDHRA PRADESH. INDIAN JOURNAL OF APPLIED RESEARCH, 53–57. https://doi.org/10.36106/ijar/8509726

Singh, K., & Singh, D. R. (2023). Handicraft Sector in India: An Instrument for Rural Economic Growth and Women Empowerment. Advances in Research, 24(5), 238–246. https://doi.org/10.9734/air/2023/v24i5974

Sirika, B. (2008). Socio-economic status of handicraft women among Macca Oromo of West Wallaga, Southwest Ethiopia. Ethiopian Journal of Education and Sciences, 4(1). https://www.ajol.info/index.php/ejesc/article/view/42987

Subbiah, R. (2022). Handicrafts Industry in India. International Journal For Multidisciplinary Research, 4(5), 1659. https://doi.org/10.36948/ijfmr.2022.v04i05.1659

अग्रवाल,रोहित .(2019),भारतीय वस्त्र उद्योग का विकास, अर्थब्यवस्था एवं रोजगार में इसका योगदान,वस्त्र नीति तथा अंतराष्ट्रीय बाजार में इसकी स्थिति का विवेचनात्मक अध्ययन,Pune Research Scholar, An International Multidisciplinary Journal,ISBN 2455-314X,Vol.5,Issue 2,pp.1-9

बजाज,जेवी मनीषा (2019). उत्तरपूर्व में विकास का ताना बाना योजना, अप्रेल,पृ.क्र.40 -44.

भारती,रजनी एवं मोरे,गीता (2014). कला एवं ब्यवसाय एक विश्लेषणात्मक अध्ययनः आर्थिक परिपेक्ष्य में,International Journal of Research Granthaalayah,pp.01-03.

सविता वर्मा (2023)'बस्तर की ढोकरा हस्तकला : छत्तीसगढ के आदिवासियों की परंपरागत कला,International Journal of applied Research ,2023,9(4),pp.114-117.

मेश्राम,बी.एन. (2018),भारत में जाजातियां : छत्तीसगढ के विशेष संदर्भ में, International Journal of Review and Research in Social Science,Vol.06,Issue-4,Oct.-Dec.2018,pp.521-524.

शर्मा ,शीतल एवं शुक्ला ,हंसा 2015 हस्तशिल्प ,विनिर्माण और रोजगार, योजना,अप्रेल 2015,पृ.क्र.55.67।

जयकर,पीपुल ,हथकरघा एवं हस्तशिल्प का पुनरुद्धार ,भारत की हस्तकला की परंपरायें, वर्तमान ,भूत और भविष्य, पृ.क्र. 44.52.

हस्तशिल्पों की धरोहर राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र,राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद,अप्रेल, 2019।

दीपा देवांगन एवं के.एल.दांडेकर 2018, International Journal of Review and Research in Social Science,Vol.06,Issue-2,April-June.2018,pp. 183-186

ग्रामीण एवं कुटीर उद्योग नीति 2023.24,गढबो नवा छत्तीसगढ,आत्मनिर्भर और निरंतर प्रगतिशील अर्थब्यवस्था की ओर,छत्तीसगढ शासन,वाणिज्य एवं उद्योग विभाग।

श्रीवास्तव,ओमप्रकाश 2022, महिला सशक्तिकरण और कुटीर उद्योग : विकास का नवीन उपागम, लोकप्रशासन, खंड 14,अंक 1,जनवरी.जून 2022,पृ.क्र.149.156।

हेना नकवी ,(2020). ग्रामीण भारत मे परंपरागत कला कौशल से रोजगार

उमाशंकर (2009).दीक्षित ,मथुरा की मूर्ति, कुरुक्षेत्र, जुलाई,पृ.क्र. 10-12.

 DOI: 10.52228/JRUA.2025-32-1-5